प्रातः क्लास 1/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चे समझते हैं हम बेहद के बाप के सामने बैठे हैं। यह भी जानते हो बेहद का बाप इस रथ पर ही आते हैं। जब बाप दादा कहते हैं यह तो जानते हो कि शिवबाबा है और वह इस रथ पर बैठा हुआ है। अपना परिचय दे रहे हैं। बच्चे जानते हैं यह बाबा है। बाबा मत देते हैं कि बच्चों रूहानी बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो, जिसको योगअग्नि कहा जाता है। अभी तुम बाप को तो पहचानते हो। जब बच्चा बाप को पहचानता है तो ऐसे कब थोड़े ही कहेंगे कि बाप का परिचय दूसरे को कैसे देवें। तुमको भी बेहद के बाप का परिचय है तो ऐसे थोड़े ही कहेंगे बाबा हम आप का परिचय दूसरे को कैसे देवें। परिचय है तो जरूर दे सकते हो। परिचय कैसे देवें यह तो प्रश्न ही नहीं उठता। तुमने जैसे बाप को जाना है वैसे तुम कह सकते हो हम आत्माओं का बाप तो एक ही है। इसमें मुँझने की दरकार ही नहीं रहती। कोई2 कहते हैं बाबा आपका परिचय देना बड़ा मुश्किल होता है। अरे बाप का परिचय देना इसमें तो मुश्किल कोई बात ही नहीं। जानवर भी इशारे से समझ जाते हैं कि हम फलाने का बच्चा हूँ। तुम भी जानते हो हम आत्माओं का वह बाप है। हम आत्माओं ने इस शरीर में प्रवेश किया है। जैसे बाबा ने समझाया है अकालमूर्त। ऐसे नहीं कहेंगे कि उनके सिकल वा रूप नहीं है। बच्चों ने पहचाना है। बिल्कुल ही सहज बात है। आत्माओं का बाप एक ही निराकार है। हम सभी आत्माएँ भाई2 हैं। बाप से हमको वरसा मिलना है। यह भी जानते हो। ऐसा कोई बच्चा इस दुनिया में न होगा जो बाप की रचना और रचयिता बाप को न जानता हो। बाप के पास क्या प्रापर्टी है सभी जानते हैं। तुम जानते हो हम आत्माएँ हैं। यह है ही आत्माओं और परमात्मा का मेला। यह कल्याणकारी मिलन है। बाप है ही कल्याणकारी। बहुत कल्याण करते हैं। बाबा को पहचानने से समझते हो बेहद के बाप से हमको बेहद का वरसा मिलता है। वह जो सन्यासी गुरु होते हैं उनके शिष्यों को गुरु के वरसे का मालूम नहीं रहता। गुरु पास क्या मिलकीयत है यह भी कोई शिष्य मुश्किल जानते हैं। तुम्हारी बुद्धि में तो है वह शिवबाबा है। मिलकीयत भी बाबा पास होते हैं। बच्चे जानते हैं बेहद के बाप का मिलकीयत है विश्व की बादशाही। स्वर्ग। यह बातें सिवाय तुम बच्चों के और कोई की बुद्धि में नहीं है। लौकिक बाप पास क्या मिलकीयत है वह उनके बच्चे ही जानते हैं। अभी तुम कहेंगे हम जीते जी पारलौकिक बाप के बने हैं। उनसे क्या मिलता है वह भी जानते हैं। हम पहले2 शूद्रकुल में थे। अभी ब्राह्मणकुल में आ गये हैं। यह नालेज है बाबा इस ब्रह्मा तन में आते हैं। इनको प्रजापिता ब्रह्मा कहा जाता है। वह(शिव) तो है सभी आत्माओं का फादर। इनको(प्रजापिता ब्रह्मा) तुम जब कलियुग में थे तब ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर कहते थे। अभी नहीं कहेंगे। अभी कहेंगे फादर है। कलियुग में सभी कहते हैं प्रजापिता ब्रह्मा ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर है। अभी तो फादर ही कहेंगे। हम उनके बच्चे हैं। कल जिसको ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर कहते थे। आज उनको फादर कहते हो। शिवबाबा के लिए तो कहते हैं वह हाजरा हुजूर है। जानी–जाननहार है। यह भी तुम अभी समझते हो वह कैसे रचना के आदि, मध्य, अन्त का नालेज देते हैं। वह सभी आत्माओं का बाप है। उनको नाम–रूप से न्यारा बोलना यह तो झूठ है ना। उनका नाम, रूप भी याद है, रात्रि भी मनाते हैं। जयन्ती मनुष्य का होता है। शिवबाबा की रात्रि कहेंगे। बच्चे समझते हैं रात्रि किसको कहा जाता है। रात में घोर अंधियारा हो जाता है। अज्ञान अंधेरा है ना। ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अंधेरे विनाश। यह भी गाते हैं; परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं समझते। ज्ञान सूर्य कौन है, कब प्रगटा कुछ भी पता नहीं। बाप समझाते हैं ज्ञान सूर्य को ज्ञान सागर कहा जाता है। बेहद का बाप है ज्ञान का सागर। सन्यासी गुरु गुसाई आदि अपन को शास्त्रों की अथॉरिटी समझते हैं। वह सभी है भक्ति। बहुत वेद–शास्त्र पढ़कर विद्वान होते हैं। तो बाप रूहानी बच्चों को बैठ समझाते हैं इनको कहा जाता है आत्माओं और परमात्मा का मेला। तुम जानते हो बाप इस रथ में आये हुए हैं। उनको मेला कहा जाता है। जब हम घर जाते हैं तो वह भी मेला है। यहाँ बाप खुद बैठ पढ़ाते हैं। वह फादर भी है, टीचर भी है। यह एक एक प्वाइंट्स तुम अच्छी रीत धारण करो। बोलो मत।

अब बाप तो है निराकार। उनको अपना शरीर नहीं है। तो जरूर लेना पड़े। तो खुद कहते हैं मैं प्रकृति का आधार लेता हूँ। नहीं तो बोलूँ कैसे? शरीर बिगर तो बोलना नहीं होता। तो बाप इस तन में आते हैं। इनका नाम रखा है ब्रह्मा। हम भी शूद्र से ब्राह्मण बने हैं तो नाम बदलना ही चाहिए। बाप समझाते हैं नाम तो तुम्हारे रखे थे। बाकी ब्राह्मणों की माला बन नहीं सकती है। घड़ी2 माला के दाने ऊपर–नीचे होते रहते हैं। कब देखो तो आगे नम्बर में, फिर कब देखो तो है ही नहीं। इसलिए ब्राह्मणों की माला नहीं होती। भक्तमाल, रुद्रमाला गाई हुई है। ब्राह्मणों की माला होती नहीं। सारी दुनिया के मनुष्य आत्माएँ जैसे कि रुद्र माल हैं। यह भी बुद्धि से समझा जाता है इतने बना तो नहीं सकते। रुद्र की 500 करोड़ की माला है। अभी बाप बैठ समझाते हैं यह माला कैसे बनी हुई है। इसका फिर छोटा मॉडल रूप बनाते हैं। ऊपर में है फल। फल को नमस्ते करते हैं। एक है रुद्र माला, दूसरी है रुण्ड माला। रुण्ड माला विष्णु की गाई जाती है। रुद्र माला वह है निराकारी। और वह है साकारी माला। विष्णु की माला भी चली आई है। पहले नम्बर में माला का दाना कौन है? कहेंगे युगल। इसलिए सूक्ष्मवतन में भी युगल दिखाया है। विष्णु भी 4 भुजा वाला दिखाया है। दो भुजा ल0 की दो भुजा ना0 की। रावण को जो गदहे का शीश दिखाया है ऐसे कोई मनुष्य होता ही नहीं। यह समझाया जाता है विकारी बनने से मनुष्य ऐसे गदहे मिसल बन जाते हैं। गदहे को कितना श्रृंगार करो फिर मिट्टी में अपन को खराब कर देंगे। बाप भी समझाते हैं मैं धोबी हूँ। मैं योगबल से तुम आत्माओं को शुद्ध बनाता हूँ। फिर गदहे अपना श्रृंगार ही गंवा देते हैं विकार में जाकर। बाप आते हैं सभी को शुद्ध बनाने। आत्माओं को आकर सिखलाते हैं। तो सिखलाने वाला जरूर यहाँ चाहिए ना। पुकारते भी हैं कि आकर पावन बनाओ। कपड़ा भी मैला होता है उनको धोकर शुद्ध बनाया जाता है। तुम भी पुकारते हो हे पतित पावन बाबा आकर पावन बनाओ। आत्मा पावन बने तब शरीर भी पावन बने। तो पहले2 मूल बात होती है बाप का परिचय देना। बाप का परिचय कैसे देवे यह तो प्रश्न ही नहीं पूछ सकते। तुमको भी बाप ने परिचय दिया है तब तो तुम आये हो ना। बाप के पास आते हो। बाप कहाँ है? इस रथ में। यह है अकाल तख्त। तुम आत्माएँ भी अकालमूर्त हो। यह सभी तुम्हारे तख्त हैं। जिस पर तुम आत्माएँ विराजमान हो। वह तो अकाल तख्त जड़ हो गया ना। तुम जानते हो अकाल मूर्त अर्थात् निराकार। जिसका साकार नहीं है। मैं आत्मा विनाशी हूँ। कब विनाश हो न सके। एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ। मुझ आत्मा का पार्ट अविनाशी नूँधा हुआ है। आज से 5000 वर्ष पहले भी हमारा ऐसे ही पार्ट शुरू हुआ था। वन वन वन(1–1–1) से हम यहाँ पार्ट बजाने घर से आते हैं। यह है ही 5000 वर्ष का चक्र। वह तो लाखों वर्ष कह देते। इसलिए थोड़ी वर्षों का विचार ही नहीं किया जाता।

तो ऐसा कब कह न सके कि हम बाप का परिचय कैसे देवें। ऐसे2 प्रश्न पूछते हैं तो वन्डर लगता है। अरे तुम बाप के बने हो, फिर बाप का परिचय क्यों नहीं दे सकते हो। हम सभी आत्माएँ हैं। वह हमारा बाबा है। सर्व का सद्गति करते हैं। सद्गति कब करेंगे यह भी अभी तुमको पता पड़ा है। कल्प कल्प कल्प के संगमयुग पर आकर सर्व की सद्गति करेंगे। वह तो समझते हैं अजन 40 हजार वर्ष पड़े हैं। और पहले से ही कह देते कि नाम–रूप से न्यारा है। अब नाम–रूप से न्यारा कोई चीज़ थोड़े ही होती है। पत्थर–ठिक्कर का भी नाम है ना। तो बाप बैठ समझाते हैं मीठे2 बच्चों तुम आये हो बेहद के बाप के पास। बाप भी जानते हैं कितने ढेर बेहद के बच्चे हैं। हद और बेहद से भी पार है। सभी बच्चों को देखते हैं। जानते हैं इन सभी को मैं लेने आया हूँ। सतयुग में तो बहुत ही थोड़े होंगे। कितना क्लीयर है इसलिए चित्रों पर समझाया जाता है। नालेज तो बिल्कुल ही सहज है। बाकी याद की यात्रा में टाइम लगता है। ऐसे बाप को तो कब भूलना न चाहिए। बाप कहते हैं माम एकम् याद करो तो पावन बन जावेंगे। मैं आता हूँ पतित से पावन बनाने। तुम अकाल मूर्त आत्माएँ अपने2 तख्त पर विराजमान हो। बाबा ने भी इस तख्त का लोन लिया है। जिस भाग्यशाली रथ पर बाप प्रवेश होते हैं

कोई कहते हैं परमात्मा का नाम–रूप नहीं है। यह तो हो नहीं सकता। उनको पुकारते हैं, महिमा गाते हैं। जरूर कोई चीज़ है ना। तमोप्रधान बुद्धि होने कारण कुछ भी समझते नहीं हैं। तुम बच्चे जानते हो हम आत्मा पहले सतोप्रधान थी। फिर तमोप्रधान बनी है। पुनर्जन्म लेते2 नीचे चले आते हैं। बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों इतने 84 लाख योनियाँ तो कोई लेते ही नहीं। है ही 84 जन्म। पुनर्जन्म भी सबका होगा। ऐसे थोड़े ही ब्रह्म में जाकर लीन होंगे वा मोक्ष को पावेंगे। यह तो बना बनाया ड्रामा है। एक भी कम जास्ती नहीं हो सकता। यह तो बना बनाया अनादि अविनाशी ड्रामा है। इस बड़े नाटक से फिर छोटे2 नाटक बनते हैं। वह सभी है विनाशी। अभी तुम बच्चे बेहद में खड़े हो। तुम बच्चों को नॉलेज भी मिली है हमने कैसे 84 जन्म लिये हैं। अभी बाप ने बताया है। आगे किसको पता नहीं था। ऋषि–मुनि भी कहते थे हम नहीं जानते हैं। बाप आते ही हैं संगमयुग पर। इस पुरानी दुनिया को चेंज करने। ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना फिर से करते हैं। वह तो लाखों वर्ष कह देते। कोई बात याद भी न आ सके। महाप्रलय भी कोई होती ही नहीं। बाप राजयोग सिखलाते हैं फिर राजाई तुम पाते हो। इसमें तो संशय की बात ही नहीं। तुम बच्चे समझते हो पहले नम्बर में सबसे प्यारा है बाप। फिर दूसरा प्यारा है श्री कृष्ण। सन्यासी थोड़े ही यह समझते हैं। वह तो आते ही हैं बाद में उनको क्या पता। तुमने 84 जन्म लिये हैं। तुम ही जानते हो। श्रीकृष्ण है स्वर्ग का पहला प्रिन्स। नम्बरवन। वही फिर 84 जन्म लेते हैं। इनके ही अन्तिम जन्म में मैं प्रवेश करता हूँ। अभी तुमको पतित से पावन बनना है। पतित–पावन बाप ही है। पानी की नदियाँ थोड़े ही पावन कर सकती है। यह नदियाँ तो सतयुग में होती है। वहाँ तो पानी बहुत शुद्ध रहता है। किचड़ा आदि नहीं वहाँ होता। यहाँ तो हरद्वार में कितना किचड़ा पड़ता है। बाबा का खुद देखा हुआ है। उस समय तो ज्ञान नहीं था ना। अभी वन्डर लगता है, पानी कैसे पावन बना सकता। कितनी मनुष्यों की पत्थर बुद्धि है।

तो बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चे कब भी मुँझो नहीं। बाप को याद कैसे करें? अरे तुम बाप को याद नहीं कर सकते हो। वह है कुख की सन्तान। तुम हो एडॉप्टेड बच्चे। एडॉप्टेड बच्चों को जिस बाप से मिलकियत मिलती है उनको भूल सकते हैं क्या। बेहद के बाप से बेहद की मिलकियत मिलती है। तो उनको भूलना थोड़े ही चाहिए। लौकिक बच्चे कब बाप को भूलते हैं क्या; परन्तु यहाँ तो माया का अपोजीशन होता है। माया की युद्ध चलती है। यह सारी दुनिया कर्म–क्षेत्र है। बाप कर्म–अकर्म–विकर्म का राज़ भी समझाते हैं। आत्मा इस शरीर में प्रवेश कर यहाँ कर्म करती है। यहाँ रावण राज्य में कर्म विकर्म बन जाते हैं वहाँ रावण राज्य ही नहीं तो कर्म अकर्म बन जाते हैं। विकर्म कोई होता ही नहीं। यह तो बहुत सहज बात है। यहाँ रावण राज्य में कर्म विकर्म हो जाते हैं। इसलिए कर्मों का दण्ड भोगना पड़ता है। ऐसे थोड़े ही कहेंगे रावण अनादि है। नहीं। आधा कल्प है रावण राज्य। आधा कल्प है रामराज्य। तुम जब देवताएँ थे तो तुम्हारे कर्म अकर्म थे। अभी यह है नालेज। बच्चे बने तो फिर पढ़ाई पढ़नी है। बस। फिर और कोई धंधे आदि का ख्याल भी न आना चाहिए; परन्तु गृहस्थ व्यवहार में रहते यह धंधा आदि भी करने वाले हैं। तो बाप कहते हैं कमल फूल समान रहो। ऐसे देवताएँ तुम बनने वाले हो। यह निशानी विष्णु को दे दी है; क्योंकि तुमको शोभेंगे ही नहीं। उनको शोभता है। वही विष्णु के दो रूप ल0ना0 बनने वाले हैं। वह है ही अहिंसक परमो देवी–देवता धर्म। न कोई विकार की काम–कटारी होती, न लड़ाई–झगड़ा आदि होता। तुम डबल अहिंसक बनते हो। तुम ही थे अभी फिर बनते हो। बाप ने 84 का चक्र समझाया है यह बातें कोई शास्त्रों में भी नहीं है सिर्फ देवताओं के चित्र रह गये हैं। कोई से पूछो कहेंगे यह देवताएँ सतयुग के मालिक थे और कोई इनसे ऊपर है नहीं। नाम ही है गोल्डेन एज। कंचन दुनिया। आत्मा और काया दोनों कंचन बन जाती है। कंचन काया कौन बनाते हैं? बाप। अभी तो आयरनएजेड है ना। अभी तुम बच्चे जानते हो सतयुग पास्ट हो गया। कल सतयुग था ना। तुम राज्य करते थे। फिर

झट कहेंगे हमारा राज्य था। अभी तुम नालेजफुल बनते हो। सभी तो एक जैसे नहीं बनेंगे। अगर कोई कहे बाबा कृपा करो रहम करो तो ट्रान्सफर कैसे होंगे। क्लास में तो नम्बरवार होते हैं। एक जैसे हो न सके। बाप तो गिनती का हिसाब किताब बताते हैं। हम हर 5000 वर्ष बाद आता हूँ। अभी विचार करो आगे हम कितने बेसमझ थे। बाप जिसने विश्व की बादशाही दी उनको हम भूल गये। किसने भुलाया? इन तुम्हारे गुरुओं ने। बाप कहते हैं हम तो कोई शास्त्र आदि नहीं पढ़ता हूँ। मेरा चित्र दिखाते हैं। ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों शास्त्रों का सार सुनाता हूँ। एडॉपशन बच्चों को बाप बैठ नॉलेज पढ़ाते हैं। इसलिए यह नालेज तुम सिर्फ ब्राह्मण ही जानते हो। न शूद्र न देवताओं को ही यह ज्ञान है। ब्राह्मणों को पढ़ाने वाला शिवबाबा और ब्राह्मणों को गुम कर दिया है। बाकी देवता क्षत्री वैश्य शूद्र दिखाते हैं। इन सभी बातें को तुम अभी समझते हो। तुमको अन्दर में खुशी रहती है। स्टुडेन्ट जो पढ़ाते हैं उनकी चाल चलन आदि भभके से होते हैं। वह होता है देह का नशा। तुम्हारा है देही अभिमानी का नशा। यह है शुद्ध। बाप हमको पढ़ा रहे हैं। बिचारे मनुष्य तो जानते ही नहीं इसलिए अनेक प्रकार के विघ्न पड़ते रहते हैं। अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं। शादी बरबादी, कलियुगी लोक लाज कुल की मर्यादा.....

तो बाप कहते हैं मीठे2 सिकीलधे बच्चों! किसका बच्चा गुम हो जाता है फिर 6/8 मास बाद आकर मिलता है बड़ी सिक प्रेम से मिलते हैं। बाप भी कहते हैं मेरे बच्चे कितने वर्षों से भूल गुम हो गये हो। आगे कब मिले थे बाप से? 5000 वर्ष से बाप से गुम अलग हुए हो। अभी फिर तुमको पढ़ा रहा हूँ। भारतवासियों को यह भी पता नहीं कि अभी हम रावण राज्य में हैं। तुम समझते हो हम बरोबर पराये रावण राज्य में थे। वह राज्य हमने श्रीमत पर स्थापन किया था। अभी फिर कर रहे हैं। जानते हो हमारा राज्य जब होगा तो बाकी यह सब गुम हो जावेंगे। जैसे बड़ का झाड़ होता है ना। उनकी शाखाएँ बड़ी लम्बी होती हैं। मोटर में जाकर सारा चक्र लगाते हैं। यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ कितना बड़ा है। सतयुग में बहुत छोटा जरूर देवी देवताओं का ही झाड़ था। अभी तो कितने धर्म आदि हैं। गाते भी हैं फकीराने साहब लगदा प्यारा..... तुम अभी फकीर हो ना। सिवाय एक बाप के और कोई प्यारा नहीं लगता। इस पर दृष्टान्त भी देते हैं ना माई ने कहा यह लाठी भी छोड़ो। नहीं तो इनकी भी याद तुमको आवेगी। बाप भी समझाते हैं देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो। सभी चाहते हैं हम घर जावें। यहाँ तो अपार दुख है। विनाश के लिए भी कितनी तैयारियाँ कर रहे हैं। बाप कहते हैं यह विनाश भी कल्प पहले मिसल होना है। कल्प2 होता आया है। यह तो खुशी की बात है। कृष्ण के चित्र में भी दिखाया हुआ है विनाश के बाद ही विश्व में शान्ति होगी। अभी तुम श्रीमत पर विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हो तो तुम शान्तिधाम चले जावेंगे फिर तुम आकर नई दुनिया में राज्य करेंगे। यह बाप से वरसा मिलता है ना। बाप आकर नॉलेज देते हैं। इसमें आशीर्वाद आदि की बात ही नहीं। बेहद के बाप से बेहद का वरसा मिलता है यह भी अभी तुम जानते हो। भारत स्वर्ग था और कोई धर्म था ही नहीं। अभी आत्माएँ घोर–अंधियारे में हैं उनको अब सोझरा में बाप ही ले जाते हैं। गायन भी है ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अंधेर विनाश। कल्प की आयु ही कितने लाखों वर्ष कह देते तो घोर अंधियारा हुआ ना। जागते ही नहीं। बाप कहते हैं यह शास्त्र आदि सभी भक्तिमार्ग के हैं। भक्ति दुर्गति है। बाप ही आकर भक्ति का फल देते हैं। मुक्ति जीवनमुक्ति में ले जाते हैं। सद्गति कहा जाता है शान्तिधाम और सुखधाम को। बच्चों को नशा चढ़ा रहना चाहिए हम यह शरीर छोड़ जाकर भविष्य में यह बनेंगे। खुशी में अन्दर नाचना चाहिए। यह है गुप्त खुशी। बच्चे सभी एक जैसे स्वीट नहीं होते हैं। नम्बरवार होते हैं। इसलिए बाबा भी कहते हैं नम्बरवार स्वीट, स्वीटर, स्वीटेस्ट गाया जाता है ना। अभी तुम बच्चों को स्वीटेस्ट बनना है। इसको कहा जाता है इस्कॉलरशिप। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

शिवबाबा याद है?